# कतरन-3

## विशेष पत्र
### बसते बसेरे, उजड़ते घोंसले

आज तेजी ससे निर्माण कार्य बढ़ता जा रहा है। जिसका परिणाम उजड़ते घोंसले। चारों तरफ बड़ी-बड़ी इमारतें, बड़े-बड़े मॉल देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानव आज कांक्रीट के जंगल तैयार कर रहा है। हम आज प्राकृतिक जंगल से दूर होते जा रहे हैं। परिणाम यह हुआ कि आज पंछी, जीव-जन्तु हम दूर होते जा रहे हैं। वर्षों पुराने पेड़ और बड़े-बड़े जंगल कटने से घोंसले उजड़ गए जिसके कारण आज परिंदे गायब हो गए। आकाश सूना हो गया, सुबह की चहचहाट खत्म हो गई। पर्यावरण गड़बड़ा गया जिसका परिणाम आज हमें दिखाई दे रहा है। जिसे हम पेड़ कहते है वह सिर्फ पेड़ ही नहीं वहां संगीत बसता है। हजारों, लाखों कीट, पतंगे, जीव, जन्तु, पखेरू वहां अपना बसेरा बनाते हैं। यदि हमें अपना और आगे आने वाली पीढ़ी का भविष्य खुशहाल देखना है तो आज पर्यावरण को बचाना होगा। तब ही हमारे जीव... बच पाएंगे और हमारा आगे सुनहरा भविष्य...

-श्रीमती...

## विशेष पत्र
### क्या शासन वास्तव में किंकर्तव्यमूढ़ हो गया?




...ों को देखते हुए लगता है कि ...स्थ हो गई है कि उसे न ...न कानों से सुनाई ... सुनकर भी ... स्वामी ...

## आवाज सुनो

...र्ण पंक्तियां हैं उपर्युक्त शीर्षक ...त की। इन पंक्तियों में कवि ने ...बुकता के साथ पंडित जवाहर ...रूजी की वाणी का वर्णन किया ... नवंबर को देश के युगचेता ...जी की जयंती है। उत्सवी तामझाम ...समारोहों की औपचारिकता में ...होती हैं जयंतियां। ये अवसर अब ...ाहों के शिकंजे में जकड़े हुए हैं और ...ी अनुभूति व अस्मिता खोते जा रहे ...र वर्ष हम नेहरू की जयंती बाल ...स के रूप में मनाते हैं, लेकिन उनके ..., उनके त्याग, उनकी तपस्या क्या ...ससे किसी को सरकार नहीं है। बस ...थि, मंच पर विराजमान अतिथि, मुख्य ...तिथि और अध्यक्ष की आवाभगत, ...गत और फोटो के बीच सही उद्देश्य ...टककर रह जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विचारों के बिखराव को रोककर हम इसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं। इस बाल दिवस पर हम उन नेहरूजी को समझें जिन्होंने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' की रचना कर राष्ट्र के प्रति चैतन्य जागृत किया था। कितनी अकुलाहट होगी उनके अंदर भारत के अतीत की खोज की और उसे वर्तमान पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने की। 'मेरी आवाज सुनो' ये स्पंदन ध्वनि, इसका स्मरण कितना प्रासंगिक है।

-श्रीमती शोभा मिश्र,

...चाहिए, वे पूरी ...क-दूसरे की ...हैं। अभी ... ...लगता है, चोर-चोर मौसेरे भाई। ...ता है कि जब सांसद चुनकर आते हैं तब ...ह क्यों कहते हैं कि वह देश और समाज ...गा करेंगे?

-श्रीमती शोभा मिश्र

## अधूरी आजादी

हम कहने को आजाद तो हो ग... लेकिन हमारी बुनियादी समस्याएं अ... भी वहीं की वहीं हैं। हमारे देश ने विका... किया, कम्प्यूटर युग आया लेकिन इसके बावजूद देश की आधी आबादी के पास रहने को घर, खाने को रोटी और पहनने को कपड़े नहीं हैं। इतना ही नहीं बेरोजगारी की समस्या, बढ़ती महंगाई, शिक्षा का अभाव, चिकित्सा सुविधाओं की कमी से जूझना तो जैसे आम जनता की नियति बन चुकी है। सरकार की योजनाओं का लाभ गरीबों तक नहीं पहुंच पा रहा है, नारी बेआबरू हो रही है, भ्रूण हत्या चरम पर है। समाज में जाति और मजहब की दीवार टूटने की बजाय और मजबूत होती जा रही है। इन सबके बावजूद सरकार गंभीर नहीं है। जब तक समाज के आखिरी आदमी तक विकास नहीं पहुंचता, हमारी आजादी अधूरी है।

-शोभा मिश्र, सागर

...भा मिश्र,
शांति विहार, सागर

श्रीमती शोभा मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

कतरन – 3
– श्रीमती शोभा मिश्र

प्रथम संस्करण – 2013

प्रकाशक
**अमन प्रकाशन,**
नमक मंडी, सागर 4700002 (म.प्र.)
दूरभाष – 09826434225
*Ph. & Fax : 07582-406929*

अक्षर संयोजन
**एक्टिव कम्पयूटर्स, सागर**
मोबा. – 9826434225

Scanned with OKEN Scanner

# मैं धरा हूँ

मैं धरा हूँ
मैं धरती हूँ
सूखी हूँ
दरकी हूँ
बंजर हूँ।
आह!
कितनी गर्मी
कितनी तपन
मैं बैचेन हूँ
लाचार हूँ।
उखड़ी मेरे कोख
सूना मेरा आंचल
सूखा मेरा आंगन
रोता मेरा संगीत।
लदी-लदी थी वृक्षों से मैं
अमलताश, टेसू कचनार
पीपल, नीम और गुलमोहर
सबकी शोभा न्यारी थी।
न जाने कब और कैसे
सब बिखर गया
सब दरक गया
सब टूट गया।
मै सूख गई, मैं दरक गई
मैं धरा हूँ, मैं धरती हूँ
मुझे बचाओ, मुझे बचाओ

**शोभा मिश्र**



Scanned with OKEN Scanner

# घर का एक कोना

घर के किसी एक कोने में
चुपचाप थोड़ा समय चुराकर
आंखे बंद करके बैठना
कितना अच्छा लगता है।

पलभर में न जाने कितनी
यादें आती ओर जाती है
जो बरबस मन को भा जाती है
मन नहीं करता कोने से उठने का।

छोटे से आंगन में अमरुद के
पेड़ पर चढ़ जाना
फिर कुछ आमरुदों को
पत्रों से छुपाना

गिरते पानी में स्कूल जाना
फिर भींगकर लौटना
मेरे पानी के गड्ढों में
पत्थर मारना

आज भी सुखद लगता है
तपती गर्मी के दिनों में
खेलते-खेलते आम की
ऊमराई अंदर जाना

फिर पत्थर से
अमिया गिराना
आज भी याद है
इस घर के किसी कोने में
चुपचाप थोड़ा समय चुराकर
बैठना आज भी सुखद लगता है।

**शोभा मिश्र-**



Scanned with OKEN Scanner

## अब पढ़ने वाले नहीं

वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने यह सोचने को विवश कर दिया है कि आज किताबों की क्या कीमत है? उनका क्या औचित्य है। अब वाचनालय गुम होते जा रहे हैं। शिक्षा प्रणाली की पढ़ाई सिर्फ कॅरियर और नौकरी के हिसाब से तय की गई है, वहां किताबों का कोई काम नहीं। लेकिन आज भी कुछ पुराने वाचनालय भी हैं, जहां ढेरों अच्छी पुस्तकें हैं। लेकिन उन्हें पढ़ने वाले तो दूर कोई देखता भी नहीं है। अब उनका क्या करें? कैसे नष्ट कर दिया जाए। यह समस्या ...ीर है। आज पढ़ने के अभाव में नई ...में चिंतन और विचार का अभाव ...जा रहा है, जो देश और समाज के ...तक है।

**श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

## ...बन चुके हैं

...का उपयोग गलत रूपों में होने लगा तब इन ...की बात उठने लगी। अब यदि ...

## ...सकता है

...में साफ-सुथरी ... ...विलय की लेकर ... ...घटक ...

**विशेष पत्र**

## कुपोषण विकट समस्या



## नारी आज खतरे में

आखिर कब तक? कब तक वह इसी तरह सरेआम लुटती रहेगी। कभी चौराहे पर कभी बस में, कभी रास्ते में तो कभी आफिस में। यह सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। आज हमारी नजरें शर्म से झुक जाती हैं। हमें विश्वास नहीं होता कि हम उस भारत के वासी हैं जहां नारी को पूजा जाता है। लेकिन आज मानव के रूप में दानव ने उसे सरेआम बेइज्जत किया है। रोज न जाने कितनी बालिक और नाबालिक मासूमों की इज्जत लुट रही है। मजे की बात यह है कि हर बार अपराधी को या तो कुछ साल की सजा या फिर पैसों के लेन-देन करके उन्हें छोड़ दिया जाता है और वह समाज में शान से घूमता है, लेकिन उन मासूमों का क्या? जो बेकसूर होकर भी इस सजा को जीवन भर भुगतती है। यह घटना उसकी जिन्दगी में नासूर बन जाती है जो उसे न जीने देती है और न मरने देती है। उसकी जिन्दगी नर्क बन जाती है। दिल्ली गैंग रेप में भारत की जनता पहली बार जागी है, आवाज उठाई है। हमने पहली बार भीड़ की इस इबारत को देखा जिसमें देश के हर तबके के लोग थे। शासन आज भी चुप है। राजनेता लगे है राजनीति करने में। अभी तक हमें यह नहीं पता चला कि अपराधियों को क्या सजा दी जाएगी या फिर दी जाएगी भी की नहीं। क्योंकि शासन ने अपना विश्वास को दिया है। यदि इस बार सरकार ने अपना सही निर्णय सही समय पर नहीं लिया तो शायद भारत देश भारत कहलाने लायक भी नहीं रहेगा। लुटती रहेगी ही मासूमें सरेआम।

**श्रीमती शोभा मिश्र**, स...

मूल्य ... रेखाएं ... है उत्तम ... संस्कार आज ... तो वे कैसे ... इंसान बन ... ज तरुण तो हैं ... व है। एक उच्छृ... हयापन इनके संस्क... देखा जाए तो एक ति... हाल है। कितना ... और आज के ... म लोगों में ... भाव ...

दुक... दोहरी ... इसी ... के लिए, ज... हानिकारक ... इनकी फैक्ट्र... कता। यह ... सब्जि... आ...

शांति विहार क... विचार ...

## सुरक्षा की प्रतिक्षा

महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा के मामलों में पुलिस त्वरित कार्रवाई कर रही है, वहीं कोर्ट से आरोपी को सजा मिलने के फैसलों की संख्या बढ़ी है। फिर भी समाज में महिलाएं खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहीं हैं। अब भी उनमें अज्ञात भय व्याप्त जान पड़ता है। हो सकता है इसकी बड़ी वजह घरों में जारी प्रताड़ना पर रोक न लग पाना है। घर की चहारदीवारी के अंदर अब भी महिलाएं न जाने कितनी यातनाएं मौन रहकर बर्दाश्त कर रहीं हैं। जब घर में ही सुरक्षा नहीं तो समाज से वे क्या उम्मीद रखेंगी। इस अभिशप्त चलन को समाप्त करने का दायित्व समाज का है, इसके लिए हमें ही मौन का त्याग करना होगा।

**-श्रीमती शोभा मिश्र**, सागर

...व्य ... है ... ग्र ... वि ... ाले उ ... सिंबल ... सोचना स... अपने को ... चाहे वे ... अभिनेत्रियों ... कि कहीं पि... जाए। इसलि... रखना चाहत... मिटाना होगा।

...हैं। सि... बाजी से... ओं, नेता, ...उठाने होंगे, ...चाहिए नहीं ... नासूर बन ज...

**श्रीमती शोभा मिश्र**,

नारी देश का संस्कृ... विचार की प्रतिबिम्ब हो... मातृशक्ति का प्रतीक मानी ... वाले स्वरूप को महत्व दिया ... को। नारी जागे, अपने रूप ... अपनी गरिमा की रक्षा करे।

**- श्रीमती शोभा मिश्र**, शांति विहा...

## बदल...

एक फकीर के रूप में उ... शक्ति के अवतार के रूप में। उन्हीं बाबा को सोने के सिंहास... सोने से लाद दिया गया है। ... जनता के हुआ करते थे, अब ... कि धीरे-धीरे साधारण जन उन... होता जा रहा है। कितना अजीब लगता है ... जीवन एक साधारण फकीर...

...से दूर न करें औ... बालिका एक' की भावना को ही प्रवाहि...

**-श्रीमती शो...** शां...